ओम् शान्ति 1-6-20 मधुबन

मम्मा की मुख्य विशेषतायें

1- मम्मा देही अभिमानी का एक प्रतिबिम्ब थी।

2- मम्मा दैवी गुणों की चैतन्य मूर्ति थी।

3- मम्मा त्याग मूर्ति थी।

4- मम्मा एकान्त पसन्द थी।

5- मम्मा का चलना फिरना बोलना बिल्कुल फरिश्ते सदृश्य था।

6- मम्मा सदैव एकरस अवस्था में रहती थी।

7- मम्मा का हृदय ऐसा साफ था जो सुनती थी वह सब हृदय में छप जाता था।

8- मम्मा संगमयुग में हम बच्चों के लिए एक एग्जैम्पुल थी।

9- मम्मा यज्ञ की रेसपान्सिबुल होते हुए भी सदैव निरसंकल्प रहती थी।

10- मम्मा का विशाल हृदय था। नेचुरल माँ के गुणों की डात (देन) थी जोकि माँ कभी अपने बच्चों की कमजोरी किसी को न सुनाए बिल्कुल दिल में समा देती थी। और ऐसे को प्रेम से पलटाने की कोशिश करती थी।

11- मम्मा की अपनी कर्मेन्द्रियों पर जीत थी।

12- मम्मा की जितनी ऊंची महिमा थी उतनी निरंहकारी अवस्था थी।

13- मम्मा प्रैक्टिकल कर्मयोग का एक एक्जैम्पुल थी। यहाँ पुरानी दुनिया में रहते, बसती नई दुनिया में थी।

14- मम्मा को हरदम अपना एम आबजेक्ट सामने था कि हम कौन बनने वाले हैं। तो उस लक्ष्य में प्रैक्टिकल टिकी रहती थी।

15- मम्मा ने सारी जिंदगी सेवा की न कि ली। मम्मा ने ऐसा सुन्दर जीवन बाबा की मधुर मुरली से बनाया। पर्सनल किसी से सेवा नहीं ली।

16- मम्मा ने स्थापना के समय हर विपदा से मुकाबला किया।

17- मम्मा सहनशीलता की मूर्ति थी।

18- मम्मा मान अपमान, निंदा स्तुति, दु:ख सुख, जय पराजय में समान थी। कमल फूल समान अवस्था थी।

19- मम्मा शान्तचित, गम्भीरचित और सदैव हर्षितमुख रहती थी।

20- मम्मा हम सभी बच्चों की कमी बताए फिर आगे बढ़ने की युक्ति देती थी।

21- मम्मा मात पिता अर्थात् बापदादा की सदैव आज्ञाकारी अर्थात् श्रीमत पर चलने वाली फरमानबरदार अव्वल नम्बर बच्ची थी।

22- मम्मा अटूट निश्चयबुद्धि थी।

23- मम्मा का तन भी ड्रामा प्लैन अनुसार निराला था, जिसको स्वयं बापदादा ने सलेक्ट किया। जिस तन से जगदम्बा और श्री लक्ष्मी के दैवीगुण प्रत्यक्ष होते थे।

24- मम्मा ने अन्त में शरीर की व्याधि के समय 5 तत्वों अर्थात् प्रकृति के ऊपर भी पूर्ण विजय प्राप्त की।

25- मम्मा निद्राजीत थी।

26- मम्मा ने आदि से लेकर अन्त दिन तक बापदादा की मधुर मुरली को एक दिन भी मिस नहीं किया।

मीठी जगदम्बा माँ की विशेषतायें:-

1- मीठी माँ ने हम सब बच्चों को बड़े प्रेम से, ईशारों से पालना दी। मम्मा का चित बिल्कुल साफ था, मीठी माँ ने कभी किसी बच्चे का अवगुण नहीं देखा, न कभी चित पर रखा। किसी का अवगुण देख करके अपने चित पर रखना फिर वर्णन करना फिर कईयों के दिल को खराब करना - यह धंधा बहुत खराब है, जो मम्मा को बिल्कुल पसन्द नहीं था। मम्मा ने हर बच्चे की कमियों को स्वयं में समाया, उनकी गलती कभी फैलाई नहीं। वास्तव में यही सच्चा स्नेह है।

2- सदा शीतल स्वभाव और मीठे बोल उच्चारण करने वाली माँ का सदा यही लक्ष्य रहा कि सबके दु:ख दूर करूँ। किसी भी हालत में, किसी भी बात में मम्मा को कभी क्रोध तो क्या, परन्तु आवेश भी नहीं आया। मम्मा का तेज आवाज हमने कभी नहीं सुना। मम्मा शान्ति की अवतार, प्रेम की मूर्त थी।

3- गम्भीरता का गुण जो सर्वगुणों की खान है, उसका प्रत्यक्ष स्वरुप मम्मा में देखा। ममता वाली माँ नहीं, अच्छी माँ, टीचर, गुरु जैसी माँ। खुद के सबूत से सिखाने वाली माँ। गम्भीरता के कारण मम्मा में समाने और समेटने की शक्ति थी। समाने और समेटने के कारण मम्मा सहनशीलता की मूर्त थी। सहनशीलता के गुण से सदा शीतल और शान्त थी।

4- बाबा जो भी सुनाता, मम्मा उसे इतने ध्यान से सुनती जैसे उसी समय एक-एक बात का स्वरुप बनती जा रही है। इसलिए मम्मा सदा अचल अडोल, एकरस स्थिति में रही। मम्मा की स्थिति कभी नीचे ऊपर नहीं देखी। पुरुषार्थ भी कोई मेहनत वाला हार्ड नहीं किया। मम्मा के चेहरे से सदा प्युरिटी की रॉयल्टी झलकती थी। इस प्युरिटी की पर्सनैलिटी के कारण ही जगदम्बा के रुप में मम्मा का इतना गायन और पूजन आज तक है।

5- अटल निश्चय किसको कहा जाता है, वह मम्मा की सूरत से देखा। कभी भी मम्मा ने श्रीमत में अपनी मत मिक्स नहीं की होगी। मेरा विचार यह है, मैं यह समझती हूँ... यह मम्मा ने कभी नहीं कहा। परन्तु बाबा ने यह कहा है, बाबा ने यह समझाया है। वह भी बताने में ऐसा रस जो हर एक को सहज समझ में आ जाए कि बाबा ने किस रहस्य से कहा है।

6- मम्मा की चलन कभी साधारण नहीं देखी, सदा रॉयल, इसलिए मम्मा शिवबाबा की पोत्री, ब्रह्मा बाबा की बेटी बनने से सर्व की मनोकामना पूर्ण करने वाली सरस्वती बन गई। मम्मा ने अपने लिए कोई कामना नहीं। बाप के दिये हुए खजाने से सदा सम्पन्न रही।

7- मम्मा ने कभी अपना शो नहीं किया। गुप्त पालना दी। अच्छी धारणा कराने में मदद की। आज दिन तक भी देश विदेश में बाबा के कई बच्चे हैं जिनका अनुभव है कि हम जैसे साकार मात-पिता की पालना में पल रहे हैं।

8- यही बड़ी मम्मा (ब्रह्मा) है एडॉप्ट करने वाली माँ, फिर पालना करने वाली यह (सरस्वती) माँ है। मम्मा के चेहरे से कभी ऐसा नहीं लगा कि मम्मा को कोई बन्धन है। हम सबको भी सेकेण्ड में फ्री करके शीतला बन करके बड़ी अच्छी मीठी पालना दी है।

9- मम्मा को स्वमान, स्वधर्म में रहने का सदा नशा रहा। स्वधर्म हमारा शान्त है, उसमें मम्मा शक्ति अवतार रही। बाबा ने जो कहा मम्मा कीर बुद्धि ने माना। मम्मा सदा अपने स्वमान में रही, कभी किसी का अपमान नहीं किया, न अपमान की फीलिंग में आई। सदा ज्ञान के सिमरण में रहने के कारण हर्षित और गम्भीरता की मूर्त रही।

10- मम्मा है ब्रह्मा की बेटी लेकिन संबंध में इतनी स्वच्छता, पवित्रता की शक्ति थी जो जगदम्बा बन गई और साथ-साथ मम्मा को भविष्य का, हम सो का ऐसा नशा था जो नैन चैन से, चेहरे से वह नशा दिखाई देता था जैसे सचमुच श्रीलक्ष्मी है। जैसे वह संस्कारों में भर गया - किसकी हूँ, भविष्य मेरा क्या है।

11- मम्मा सदा एकान्त में रहती थी, रोज़-रोज़ बजे उठकर बाबा की यादों में एकान्त में चली जाती, इसी पुरुषार्थ से मम्मा का सम्पूर्ण स्वरूप कई बार दिखाई पड़ता था।

12- मम्मा नम्बरवन आज्ञाकारी रही, इसलिए मम्मा का यही स्लोगन था - हुक्मी हुक्म चला रहा है। आज्ञाकारी वफादार देखना हो तो मम्मा को देखो। मम्मा ने बाबा के इशारों को समझा और हम बच्चों को बहुत सरल करके स्पष्ट करके सुनाया। मम्मा के महावाक्यों में एक-एक बात का स्पष्टीकरण है। बाबा के साथ लगन कैसी हो, वह भी मम्मा की सूरत से देखा।

13- मम्मा ने कभी नहीं कहा होगा - मैंने यह किया, सदा बाबा के तरफ इशारा किया। मैं बेटी हूँ, मात-पिता वह है, मम्मा इतनी निरंहकारी थी। कभी मम्मा ने हाथ में लॉ नहीं उठाया होगा। कभी अथॉरिटी नहीं चलाई परन्तु धारणामूर्त रही। किसके लिए भी मम्मा ने इस टोन से कभी नहीं कहा होगा कि यह तो सुधरने वाला ही नहीं है।

14- मम्मा की एक बात हमको बार-बार याद आती है, मम्मा हमेशा कहती थी कि शक्ति जमा करने में आप लोग कितनी मेहनत करते हो और फालतू खर्च कितनी जल्दी कर लेते हो। फालतू बातों में शक्ति खर्च करके फिर उदास, कमजोर हो जाते हो। कमाई करने में इतना टाइम नहीं देते लेकिन सारा दिन खर्चा ही खर्चा, फिर देवाला हो जाता और जब कोई बात सामने आती है तो कहते बहुत मुश्किल है क्योंकि ताकत नहीं है।

15- सदा शीतल स्वभाव और मीठे बोल उच्चारण करने वाली माँ का सदा यही लक्ष्य रहा कि सबके दु:ख दूर करूँ। किसी भी हालत में, किसी भी बात में मम्मा को कभी क्रोध तो क्या, परन्तु आवेश भी नहीं आया। मम्मा का तेज आवाज हमने कभी नहीं सुना। मम्मा शान्ति की अवतार, प्रेम की मूर्त थी।

16- मम्मा जब भी मिलती थी तो मम्मा का हाथ पकडो तो लगता था जैसे सकाश मिल रही है, खुशी मिल रही है। इतनी ताकत थी मम्मा के हाथ में, वह चमत्कारिक हाथ था।

17- बाबा जो भी सुनाता, मम्मा उसे इतने ध्यान से सुनती जैसे उसी समय एक-एक बात का स्वरुप बनती जा रही है इसलिए मम्मा सदा अचल अडोल, एकरस स्थिति में रही। मम्मा की स्थिति कभी नीचे ऊपर नहीं देखी। पुरुषार्थ भी कोई मेहनत वाला हार्ड नहीं किया। मम्मा के चेहरे से सदा प्युरिटी की रॉयल्टी झलकती थी। इस प्युरिटी की पर्सनैलिटी के कारण ही जगदम्बा के रुप में मम्मा का इतना गायन और पूजन आज तक है।

18- मम्मा ने हम बच्चों की पालना करने में इतना सर्वोत्तम श्रेष्ठ पार्ट बजाया, इस कारण गॉडेज ऑफ नॉलेज कहलाई, यह टाइटिल मम्मा के सिवाए किसी को नहीं मिल सकता। शिवबाबा की नॉलेज को

इतना धारण किया है तब विद्या की देवी बनी है, इसलिए विद्या धारण करने के लिए सरस्वती को याद करते हैं।

मीठी जगदम्बा माँ की अनमोल शिक्षायें

1- जो शिक्षा हम दूसरों को देते हैं, वह क्वालिफिकेशन्स हमारे में भी होनी चाहिए। बाकी वीकनेस कौनसी है, उसकी डिटेल में जाने की दरकार नहीं होती। जैसे कोई आदत है वा कोई ऐसी बात है जिसका असर शक्ल पर आ जाता है, जिसको देखकर, चाल-चलन को देखकर कोई महसूस करे कि यह ठीक नहीं है। तो वह आदत निकाल देनी चाहिए। यूं तो मन्सा वृत्ति का भी प्रभाव पड़ता है, तो उस पर भी ध्यान होना चाहिए।

2- अपने को छोटा समझना यह भी कमजोरी है। नानक नीच नहीं समझना है। न फिर अभिमान रखना है। कम से कम स्प्रिट ठीक रखनी है। नहीं तो अपने पांव पर ठहर नहीं सकेंगे। स्प्रिट में रहो। मनुष्य क्या नहीं कर सकता है। यह हमारे बड़े हैं - यह तो काम धन्धों में कहकर चलना पड़ता है। इसका मतलब यह नहीं समझना कि हम नींच है। सतयुग में भी यह नहीं कि हम राजा हैं, यह प्रजा है। वह भी नेचरल सम्बन्ध है। ऊंच नींच की इसमें बात नहीं है। अपने पांव पर खड़ा रहना है। मैं शक्ति हूँ, ऐसा समझकर चलना है।

3- ट्रस्टी और सरेन्डर - इन दोनों में सर्वोत्तम स्टेज वह है जो कोई में परतन्त्र न हो। मन की भी परतन्त्रता न हो। उसके लिए ताकत भरनी चाहिए। जो वास्तविकता है, उसमें कोई परतन्त्रता नहीं होती। चाहे हम किसको खैंच रहे हैं, चाहे कोई हमें खैंच रहा है। यह सब निकल जाना चाहिए। बाकी कोई कहे मेरे आगे कोई बात आवे ही नहीं, यह तो हो नहीं सकता। आयेगी तो जरूर। लेकिन अपनी धारणा हिम्मत और साहस चाहिए।

4- हमारे बोलने का, शब्दों का भी मैनर्स चाहिए। भाषा भी अच्छी चाहिए। बात करने की टैक्ट भी आनी चाहिए। कोई मान का, इज्जत का भूखा है, कोई नाम शान का भूखा है....उसे परखकर उस तरीके से उसे हैण्डल करना है। उसके संस्कारों को भी देखना है। इन सबमें बुद्धि की चमत्कारी चाहिए।

5- हमें अपने बोलचाल पर बहुत ध्यान देना है। तुम कहेंगे हमने तो यह अक्षर कोई ख्याल से नहीं कहा, परन्तु हर एक के साथ कैसे बात करनी चाहिए, वह भी सीखना है। हर एक समझे कि वातावरण को ठीक करने के हम जिम्मेवार हैं क्योंकि वातावरण से ही अवस्था बिगड़ती है। तो इस पर बहुत अटेन्शन रखना चाहिए।

6- ऐसा ख्याल कभी नहीं आना चाहिए कि यह सुधरेगा नहीं। भल संस्कार हर एक के अपने-अपने हैं परन्तु अपनी तरफ से जितना हो सके मेहनत करनी चाहिए। सभी एक जैसे नहीं बनते, सब वैरायटी हैं। कोई तन से मददगार बनेगा, कोई मन से, कोई धन से मददगार बनेगा। तो हमको उस वैरायटी से वैरायटी मदद लेनी है। हमारी एम यही रहे कि सबका कल्याण करें। जितनी हद में चल सकें उतना उन्हें चलाना है।

7- जैसे डाक्टर किस वीक पेशेन्ट को दवा भी समझ से देता है, नहीं तो नुकसान हो जावे। यहाँ भी हर बात में बुद्धि चाहिए। हर चीज़ का अन्दाज़ होना चाहिए। जिसका अटेन्शन मुरली में नहीं है तो समझो कि इसकी वृद्धि नहीं हो सकती। उसने जड़ को नहीं पकड़ा है। फाउन्डेशन नहीं तो इमारत कैसे बनेंगी।

8- हर एक में क्लास का इन्ट्रेस्ट पैदा करो। दूसरों की भूलों को नहीं देखो परन्तु हमारे में क्या कमी है, वह देखना है। ज्ञान स्नान सबके लिए है। तो सबको क्लास में बैठना चाहिए। ऐसे तो हम भी मुरली आपेही

पढ़ सकते हैं। ज्ञान स्नान का यह मतलब नहीं है कि सिर्फ क्लास में आवें, परन्तु उन्हें कुछ मिलना चाहिए। अगर उनको कुछ नहीं मिलेगा तो काम कैसे चलेगा। तो यह सब चीज़ें धारणा में लानी हैं।

9- भल कोई कैसा भी हो - कभी यह नहीं कहना चाहिए कि यह तो ऐसा है, यह सुधरेगा नहीं। ऐसा समझने से उनका तो जीवन चला गया। उनको तो हमको सुधारना है। हमारी रेसपान्सिबिल्टी बहुत बड़ी है।

10- आप लोग अपने घरों में रहते हैं, घर से एक भाती (मेम्बर) आता है दो नहीं आते, तो अपनी एक्टिविटी ऐसी निराली रखनी है जो आजू-बाजू वाले भी समझें कि यह बी.के. पास जाते हैं। तो वह देखें कि हम भी घर-गृहस्थ में रहते हैं, यह भी रहते हैं लेकिन इन्हों का सब निराला है, यह तो सदा खुश रहते हैं।

11- हम मनुष्य से देवता बन रहे हैं तो उनकी निशानी स्वयं में आनी चाहिए। ऐसे नहीं बस जैसे हैं वैसे बनेंगे। नहीं। हम दांव लगाते हैं कि हम मनुष्य से देवता बनते हैं तो देखना है कि हमारी चलन भी ऐसी है।

12- ऐसे नहीं कोई भूल होती है तो कहते हैं हम पुरुषार्थी हैं लेकिन कोई भूल न हो, इसका पुरुषार्थ रखना है क्योंकि सारा खाता इससे जमा होता है। ऐसे नहीं खाया, पिया बस। लेकिन यह देखना है कि आज हमने किसकी सेवा की। किसको धन दिया। अच्छा दूसरे को दु:ख नहीं देते हैं, लेकिन किसी आत्मा की सेवा की, किसको शान्ति दी! सेवा के दान का भी फल निकलता है।

13- जिसमें हमारी कमाई बढ़ती रहे वह सेवा करनी है। तन-मन-धन में जितनी ताकत है वह सेवा करनी है, जितनी शक्ति से कर सकते हैं तो क्यों न करें। ऐसे पुरुषार्थी छिपे नहीं रहेंगे।

14- ऐसे नहीं सिर्फ कहना कि एक बार भूल हो गई। आगे के लिए नहीं करेंगे। रजिस्टर भी तो अपना अच्छा रखना है। वह भी फाइनल एग्जैमन में मार्क्स जमा होंगी। अपनी चाल से पता पड़ेगा कि मेरा पुरुषार्थ कितना हड्डी है। पुरुषार्थ माना भूलों से बचकर चलना। पुरुषार्थ में भी कन्डीशन अच्छा रखकर चलना है।

15- अपनी प्रैक्टिकल जीवन पर पूरी परहेज रखो। पहले तो 5 विकारों पर पूरी जीत पानी है। भल गृहस्थ व्यवहार में, बाल बच्चों के सामने रहते, कहाँ क्रोध भी करना पड़ता है। परन्तु उस समय यह चेकिंग करनी है कि मैं यह क्रोध का एक पार्ट बजा रही हूँ। बच्चों को भी डांटना है परन्तु ऐसा न हो कि डांटने समय अवस्था नीचे ऊपर हो जाए, उसमें विकर्म बनते हैं। बाकी बच्चों के कल्याण लिए साक्षी हो, अपनी मूड को चेंज करना है जिससे वह समझे कि यह डांट रहे हैं। तो कहाँ बाहर से एक्टिग सीरियस रखकर भीतर हर्षितमुख रहना है। ऐसे समझना है कि मैंने जान बूझकर क्रोध किया है। मतलब ज्ञान से सावधानी से चलना है। सोल कान्सेस रहना है। यही प्रैक्टिकल जीवन है।

16- हमारे सामने कितने भी उपद्रव हो, कभी भी मुख से यह न निकले कि हाय यह क्या हो गया, हाय, हे भगवान आदि यह शब्द नहीं निकलने चाहिए। हमको तो पूरा निडर बनना है। ऐसी अवस्था बनानी है जैसेकि हमने सब पहले से ही देखा हुआ है। हृदय बड़ा रखना है ताकि जो कुछ आये सहन कर सकें। हर हालत में हमारा वही सहारा है। उससे हमारा बहुत स्नेह चाहिए।

17- योग ऐसी नेचरल चीज़ है। उसमें बुद्धि की लगन ऐसी लगावें जो हटाने से भी न हटे। उस समय जो भी विघ्न आवें उसको ऐसे पार करो जैसे पानी पर लकीर। टाइम वेस्ट मत होने दो। अपनी मन्सा को पूरा सम्भाल जमा करना है। फिर जितना जमा करेंगे उतना ही उस पर व्याज भी बढ़ता जायेगा।

18- कोई के वा अपने पुराने संस्कारों को नहीं देखना है। अब तो नया ही भरते जाना है। एक दो का

शुभचिंतक रहना है, जिसमें कोई अच्छा गुण है, वह उठाना है। अवगुण को नहीं देखना है। इस समय हम आत्मा को ही देखते हैं। फिर चाहे धनवान हो, चाहे गरीब हो। संस्कारों को पलटाने के लिए ही टैम्पटेशन देनी पड़ती है।

19- ऐसा भी समय आना है जो आपस में मिल भी नहीं सकेंगे। पापों का बोझा उतरने के लिए तो टाइम चाहिए इसलिए शुभ कार्य में देरी मत करो। आज का काम अभी कर लो। भविष्य श्रेष्ठ बनाने का समय अभी है, इसका पूरा कदर होना चाहिए। इस अन्तिम जन्म में यह दिन बहुत अच्छे हैं, जो धारणा की होगी उसकी परीक्षा भी इस जन्म में देनी है। इस ही जन्म में माया के तूफान विघ्न आते हैं, इसलिए डरो मत क्योंकि तुम तो जानते हो कि यह तो होना ही है।

20- अभी हम नई दुनिया के लिए निमित्त है इसलिए अब हमको जो कुछ भी करना है, वह नई दुनिया के लिए। जैसे बाबा नई दुनिया की स्थापना, पुरानी दुनिया का विनाश कर रहे हैं, तो हम भी उनके साथ है। हम भी जीते जी पहले से ही बुद्धि से इस दुनिया का विनाश कर देते हैं। अब हमको इन्डिविज्युअल अपने संस्कारों को परिवर्तन में लाने का पुरुषार्थ करना है। आत्मा को पूरा प्योर रिफाइन करना है। जिससे फिर नई दुनिया का आरम्भ होगा। तुम्हारी आसक्ति अभी इस पुरानी दुनिया में कहीं नहीं जानी चाहिए। अभी तो हमारी बुद्धि वापिस लौटने में लगी रहती है। यह दुनिया तो अब पिछाड़ी की श्वांस ले रही है। मुर्दो से दिल थोड़ेही लगानी है।

21- अपनी अवस्था की डिग्री देखते जाओ कि पुरानी दुनिया से आसक्ति टूटती जाती है। अगर टूटती जाती है तो समझो कि हम नई दुनिया का बन रहा हूँ। अब दैवी प्यार में अटकने की बात नहीं। यहाँ के भी मान मर्तबे और प्यार में दिल नहीं अटकानी है। नहीं तो प्रालब्ध में टोटा पड़ जायेगा। दैवी प्यार के संग की मदद तो इस कर्मातीत अवस्था को पाने लिए ही है। इन बातों की गहराई में जाना है, यही हार्ड पुरुषार्थ है।

22- देह अभिमान की बड़ी सूक्ष्म बातें आती हैं इसलिए ऐसे मत समझो कि सिर्फ परिवार ही बदलना है। अपने देह-अभिमान की चाल को भी बदलना है। अब हमारे दिल में तो यही है कि जायें तो पूरी इज्जत से जायें। जैसे पुराने कर्म बन्धन से मरे हों। ऐसे ही दैवी परिवार से भी मरना है। शुद्ध अशुद्ध देह की लागत से अभी पूरा पार जाना है। कहते भी ईर्ष्या, द्वेष नहीं रखना है। अभी तो कर्मातीत अवस्था को पाना है। अपने पुरुषार्थ का भी अहंकार नहीं रखना है। हम अभी ऊंच विचारों वाले हैं इसलिए छोटे-छोटे विचारों में मत पड़ो।

23- अभी बुद्धि में यह हौंसला रखना है कि परमात्मा बाप, टीचर, सतगुरू रूप से हमें पढ़ा रहे हैं। जैसे बाप बच्चे का प्रैक्टिकल रिश्ता होता है। पारलौकिक बाप पारलौकिक भी है तो लौकिक भी है, क्योंकि अभी तो परलोक से इस लोक में आया है। अभी इस लोक में उपस्थित है, तो वह रिश्ता होना चाहिए। इसमें सब नाते रिश्ते आ जाते हैं। यह चैतन्य में है तो इनसे निभाना है। मन-वचन-कर्म से प्रैक्टिकल में आना है।

24- बाबा ने जो लक्ष्य दिया है कि हम सो, तो इसका मतलब यह है कि हम पहले सो सम्पूर्ण आत्मा, फिर देवता, तो पहले अपनी उस सम्पूर्ण आत्मा की स्टेज को पकड़ना है। पूरा बन्धन मुक्त हो, बाबा के जो थे, जैसे थे, वैसे बनना है। इस समय बाबा की जो नॉलेज मिल रही है वह है ही अपनी सम्पूर्ण आत्मा की स्टेज को पकड़ने के लिए। जितना-जितना जो पकड़ेगा उसके आधार पर ही फिर प्रालब्ध मिलेगी।